शब्दप्रहार® भाग - २

विलास जैन

“मै क्यो चाहु खुशी तुझे
तु क्यो नही मुझे चाहती,
मै मनमौजी, हरफन मौला
तु बेवजह अपनेपे इतराती।”

NEW ERA'S SELF HELP®

यह कार्य नही क्रांति है।

समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है
वसुंधरा के उन रक्षकों को,
जो
इसे अपनी विरासत नही
बल्कि
अपने बच्चो की,
धरोहर मानकर
जतन करते है।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

अल्प परिचय – विलास जैन

विलास जैन इनका जन्म एक छोटेसे गाँव मे हुआ। गाँव मे पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण उन्हे छोटी उम्र मे ही गाँव छोड़कर शहरमे पढ़ाई के लिये जाना पड़ा। उन्हे किसी का मार्गदर्शन न होते हुए भी उन्होने सन १९८८ मे पुणे शहरके एक नामांकित संस्थासे एम.बी.ए. (मार्केटींग) का अध्ययन पुरा किया। उसके बाद उन्होने अपना जोड़ने वाले पदार्थोका व्यवसाय शुरु किया। शुरु मे कुछ वर्ष बेचनेका व्यवसाय किया फिर बादमे वही चिजोका खुद उत्पादन शुरु किया। उनका व्यक्तिमत्व बहुमुखी होने के कारण आज वह एक सफल और दूरदर्शी उद्योजक है। उन्होने जोड़नेवाले पदार्थो मे दो नये संशोधन किये। और अनेक उत्पादन खुद बनाये। वह एक सफल उद्योजक, संशोधक, किसान, समाजकारणी, राजकारणी तो है ही, साथ मे एक उत्कृष्ट साहित्यीक भी है। उनके साहीत्य हिंदी एवं मराठी भाषामे है। संपुर्ण साहित्य समाजपयोगी, संस्कारीत करनेवाले, प्रेरणा देनेवाले, अध्यात्म का महत्व बतलानेवाले और नैतिक मूल्य बढ़ाने वाले है। उन्होने हिंदी एवं मराठी भाषामे बालकविताये, प्रेरणा कविताये, देशभक्तीपर कविता, कव्वाली, दोहे, प्रेरक शायरी, सुविचार, सिनेगीत, भजन, जीवन दर्शन कवितायें, ग्रहोपर कविताये, समाज रचनापर कविताये, छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, मराठी गझल ऐसे अनेक साहित्य का एक बड़ा संग्रह तैय्यार किया है। उनकी अबतक पाँच किताबे प्रकाशित हो चुकी है और पाँच किताबे प्रकाशित होने के मार्गपर है। उनका सामाजिक, राजकीय और अध्यात्मिक विषयोका भरपूर अनुभव तथा गाँव और शहर के वातावरण मे बिताये हुये कई साल, उनको अपने साहित्य मे बहोत ही महत्वपुर्ण साबित हुये है। प्रकृती से अधिक प्रेम होने के कारण उन्होंने आज तक हजारो वृक्ष लगाये है। और संपुर्ण किताबोसे मिलनेवाली राशी पर्यावरण सुरक्षितता में ही खर्च होगी इसका उन्होंने प्रण किया है।

यह कार्य नही क्रांति है।

शब्दप्रहार®

भाग - २

प्रकाशन	:	प्रथम
प्रकाशक	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगांव - ४२५ ००१.(महा.)
लेखन	:	विलास जैन
प्रतिया	:	१०००
अक्षरांकन	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि.,जलगांव
निर्मिती	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि.,जलगांव
मुद्रक	:	विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव.

New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Right Reserved 2013

New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd. Company
Act 1956 Reg. No. U51909 MH2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित :

पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ कानूनी कारवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांति है।

प्रस्तावना

जिंदगी मे संघर्ष करते वक्त अनेक कविताये, कुछ शब्द समुह, सुविचार, शेरो शायरी या दोहे हमारी लढ़ने की शक्ति दुगनी कर देते है। हारती हुई बाजी जितनेमे हमारी हौसला अफ़जाही कर ऐसे साहित्य हमारे मददगार साबित होते है। अनेक मोड़ोपर यह हमे सही रास्ता दिखाते है। गुमराह होनेसे रोकते है, और हमे सही जीवन जीने की प्रेरणा देते है। मेरे भी जिंदगीमे अैसे अनेक साहित्य मार्गदर्शक, मिल का पत्थर साबित हुये है। उसी से प्रेरणा लेकर मैने सोचा मै भी कुछ ऐसे शब्दसमुह तैय्यार करु जो समाजमे मल्हम, टॉनिक या मार्गदर्शक का काम करेगें। आजके इस सांस्कृतिक प्रदुषन के जमानेमे इन सब चीजो का महत्व पहलेसे ज्यादा बढ़ गया है। क्योकी अब तुम्हे तुम्हारे पथ से गुमराह करने के लिये टि.व्ही. तुम्हारे घरमेही बैठा है। ई-मेल और एस.एम.एस. द्वारा अब आसानीसे बिना किसीको मालुम किये अनेक असामाजिक बाते की जा सकती है। पहले हर किसी की जिंदगी संस्कार, नितीमुल्य, आदर, शर्म और त्याग के धागोसे बंधी रहती थी। पर अब इलेक्ट्रॉनिक्स मिड़िया के आगमन ने इन सभी धागोको तोड़ दिया है। अब हमे क्या खाना है, क्या पीना है, क्या पहनना है, कैसे दिखना है, कैसे बर्ताव करना है, क्या खरीदना है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़ीया सिखाता है। इतना ही नही हमारे रिश्ते कैसे हो वो भी कई धारावाहिको द्वारा हमारे अवचेतन मन मे बिठाने का काम हो रहा है। मुझे आशा है के इस किताबमे से कुछ शेरो शायरी आपको गुमराह होनेसे रोक सकती है। अगर आप टूट चुके हो, हार चुके हो तो इसमेसे कुछ शेरो शायरी आपके लिये संजीवनिका काम कर सकती है। आपको इस किताबसे कुछ लाभ हुआ तो मेरा लिखना सार्थक होगा।

आपका अपना

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

शब्दप्रहार®

भाग – २

।। सूची ।।

१)	मंझिल	१.
२)	विड़म्बना	६.
३)	एहसास	१८.
४)	दुआ	२०.
५)	खुशियाँ	२१.
६)	दुःख	२४.
७)	इश्कीया	२५.

यह कार्य नही क्रांति है।

मंझिल

मंझिल के तरफ चलते वक्त
दूसरो को सहारा दे,
थोड़ा दूसरो के लिए जी
फिर चल दे।

चलने वाले हजारो होते है
मंझिल हर कोई पाता नही,
चलने वाले उसे पा जाते है
गिरने वाले वफादार होते नही।

चला तो हूँ मै
पर मंझिल का मोहताज नही,
खुशी से कटे रास्ता
फिर मंझिल मिले
या ना मिले सही।

मंझिल का मिलना जैसे
मेहबुबा का इजहार हो,
नैय्या को किनारेका जैसे
बरसोसे इंतजार हो।

हमे उनका गम नही
जो चले ही नही,
गम तो उनका है
जो मंझिल के पास
आकर डूब गये।

मंझिल पाना उतना जरूरी नही
जितना के सही चलना,
मंझिल के गुलाम मत बनना
मालूम नही कहा है तुम्हे रूकना।

जिंदगी भर रूकनेको
कोसता रहा मै,
मालुम नही था
रूकने के लिए ही
चला था मै।

मंझिल पहुचने वालोपरही
क्यो इतराती है,
चला तो हर कोई था
मगर मंझिल हर किसीको
अपनाती नही है।

मंझिल के रास्ते पर तकदीर
आखरी ड़गर होती है,
कभी पहुचने पर भी
अपनी होती नही,
तो कभी मंझिल
राहीतक पहुंचती रही।

यह कार्य नही क्रांति है।

चलते चलते पाव थक गये
जिंदगी कट गई
मालुम नही था मंझिल
चली आती है दिलसे
बुलाने वालो के पास।

राह चलते हुये मै
छाँव मे कभी बैठा नही
मालुम ही नही था
मंझिलने ही छाँव दी है।

मंझिल पाने के लिए जरुरी है
तकदीर का फासला तय करना,
किस किस को मंझिल मिले
यह तकदीर को है तय करना।

आखरी दस कदम
जो चल सकते,
वो ही मंझिल को पाते।

पैदा होते ही शुरू होती है
मंझिलको पाने की होड़,
क्या किसने सोचा है
जिंदगी की मंझिल क्या है?

कश्ती लहरोको कम
किनारोको ज्यादा चाहती है,
लहरो के कारण ही तो
वह अपनी पहचान पाती है।

विड़म्बना

चंद दिनो की नसीब थी
पितामह को वाणो की शैय्या,
आज काटो पे कटती है जिंदगी
और सिर्फ तूफानोमें चलती है नैय्या।

जगाया तो उन्हे जाता है
जो सच मे सोया हो,
सोने का बहाना करने वालोको
बताओ कैसे जगाया जाये?

गोली (दवाईयाँ) और गाली का
अब ये जमाना है,
क्या करे दोस्त
बड़ा बेरहम ये अफसाना है।

लाके छोड़ा है जिंदगीने
मुझे बीच मझधार,
दोनो किनारे बहुत दूर
फटी पड़ी मेरी पतवार।

जलने वालो को चिंगारी
बुझने वालोको फूंक,
बचने के लिये तिनका,
और डूबने के लिये
बूंद भी काफी है।

दिख रहा है अंधेरा
जहाँ मेरा आखरी पड़ाव,
किस्मत में है तड़पना
चाहे बदले कोई गांव।

यह कार्य नही क्रांति है।

होश मे जीना
अब मेरे बस मे नही,
जितना मै जिया उसके लिए
बेहोशीका शुक्रिया अदा करता हूँ।

पहले सिर्फ घरो, मंदिरो और मस्जिदो में
दीवारे हुआ करती थी,
अब संबंधोमें दीवारे खड़ी करने का
दौर आ गया।

विसंगती और विरोधाभासोसे
अब दिल दहलता नही,
मानवता और समानता की बात चले तो
हो सकता है दिल दहल जाये।

यह कार्य नही क्रांति है।

किनारो को देखकरही क्यो
नाव बेसब्र हो जाती है,
कुछ देर का साथी किनारा
कश्ती फिर लहरोपर
सवार हो जाती है।

व्यवहारिकता को दोस्ती का
नाम दिया है उन्होने,
शायद दोस्ती का मतलब
भूल गये वो।

दीवारो के फासले तो
तय हो जायेंगे,
दिलो के फासले
कैसे तय हो पायेंगे।

यह कार्य नही क्रांति है।

दीवारे सुनती नही
कुछ कहती है,
दो दिलो मे दूरीया
बनाये रखती है।

हवा का रुख देखकर ही
पतवार खोली जाती है,
तूफानोमें पतवार खुल जाये
तो नैय्या भटक जाती है।

अब बाहर के अंधेरोसे नही
अंदर के अंधेरोसे जी ड़रता है,
कई आदमियो के मिलने के बाद
एक उम्मीद का दिया जलता है।

उम्मीद की किरणे
अब जला देती है,
आशाओ की लहरे
अब डुबो देती है,
जिंदगी की जरुरते
सबकुछ मांग लेती है।

सिर्फ काबिल व्यक्तियोसे ही
उम्मीद की जाती है,
ना काबिलोसे कयामत की
तारीख पूछी जाती है।

उम्मीद के सहारे
जीने का वक्त बीत गया,
कीमत मांगता हर लम्हा
जो हमने जिया।

मेरी आवाज में
इतना दम नही,
के कयामत के बारेमें
आगाह करु इन्हे,
मतलब का बहरापन
मार गया है इन्हे।

दास्ताने बदहाली क्या बयाँ करू,
चलने भरकी कोशिश अब गिरा देती है ।

खुदा, खता क्या हुयी,
बता इस बन्दें को,
मैखानेमें शमा जली,
मदिरा नही है पीने को,
क्या तकलीफ देना इतनी
सही है इन्सा को?
मदहोश नही हुआँ तो
बता कैसे चाहुँगा तुझको।

औरोके बैसाकियों पर चलने वालो
तुम क्या किसीका सहारा बनोगे,
थोड़े देर साथ चलोंगे
फिर किसीका सहारा ढूंढ़ोगे।

कुछ जला कर चले गये,
कुछ आँसू रूला कर चले गये,
दिखते इंन्सानो जैसे थे,
काम शैतानो का कर गये।

मै आँऊ तो कहते मुसीबत है,
मै जाँऊ तो कहते आफत है,
रूक जाँऊ तो कहते कयामत है,
क्या यही उनकी शराफत है।

किसी चीज मे
भावनाओका ना होना
याने हृदय के बिना
है जीना।

चिरागों की लौ की तरह जलना हो
तो कमसे कम किसे उजाला मिले
ऐसी तमन्ना रखो।

माना के कड़ी धूप
अच्छे अच्छो के होसले
परास्त कर देती है,
मगर इसी धूप मे
खिलते कई नाजुक पत्तो
को देखा है हमने।

कड़ी धूप भले ही
लोहेको गर्म करदे,
मगर इसी धूप को
ललकारते कई नाजुक पत्तो
को लहराते देखा है हमने।

सुपुर्द-ए-खाक हो
या सुपुर्द-ए-राख,
छोड़ जायेंगे ये जहान
हिंदु हो या मुसलमान।

हर दुआयें इनको हमारी
अब गाली लगती है,
हर राहगीर हसीना इनको
हमारी साली लगती है,
या रब बचा लेना इनसे,
जेबे इनकी हमे
अब खाली लगती है।

भावनाओ के खत्म होते ही
भगवान मुझे मौत देना
क्योकी बड़ा दुखद होगा
उसके बिना एक क्षण जीना।

भावनाओको कहना ना
पूर्णत्व को कहना है मना
पूर्ण आनंद, पूर्ण खुशी
नामुमकीन है इसके बिना

भावनाये बहावो दिलमें
जीतो सारा जहाँ
हर कोई भिकारी है
इसके बिना यहाँ

पेड़ो पर उगे नाजुक पत्ते
संकटोकी गर्मी
सहने की प्रेरणा देते है।

इफ्तार के निवाले
उतरते नही अब गले,
रोजोसे दिल्लगी हो गई
अब वो चाहे जितना सताले।

खुद के लिए जिया
तो खो देगा खुदा,
औरो के लिए जीले
लुभाती है उसे यह अदा।

एहसास

इरादे हवाओ की तरह रखो
तूफानो की तरह नही,
जमीन से उखाड़ना इसे आता है
घर बसाना इसका काम नही।

बेजार हूँ कमजोर नही,
भीतर के अंगारे
अभी तो सुलगने लगे है ।

आस्था और भरोसेसे
मंदिर और मस्जिद बनते है
ईटो और पत्थरोसे नही,
ईटो और पत्थरोसे तो
मैखाने भी बनते है
पर उनसे कोई कुछ मांगता नही।

पानी चाहे कितनी बार भी
मिटादे आशाओ की खिची लकीरे
मिटनेसे पहले हर लकीर
तुम्हे आमंत्रित करके चली जाती है।

इच्छाओ के घास को
कितने बार भी उखाड़ के फेको
उखड़नेसे पहले अनेक बीज
मन के धरतीपर
बिखरकर टूट जाते है।

थर्टी प्लस नाईन को
गर ओल्ड़ वाईन कहते है,
तो फोर्टी प्लस नाईन को
सुपर फाईन कहना चाहिए,
फिफ्टी प्लस नाईन को
ट्रिपल रिफाईन्ड कहना चाहिए,
सिक्सटी प्लस नाईन को
जिनाईन कहना चाहिए
और सेवन्टी प्लस नाईन को
डिव्हाईन कहना चाहिए।

दुआ

हे रब ना निकले इस
दिवाली किसीका दिवाला
और रमजान में ना जाये
किसी की जान
है तू सबका रखवाला
बनी रहे तेरी, यही पहेचान।

मेरी मेहनत तेरी रेहमत
मेरी खुदी तेरी इनायत
मेरी कमाई तेरी बरकत
मेरी साँसे तेरी करामात
मेरी खुशी तेरी मोहब्बत
मेरी रोटी तेरी दावत।

हर दुआ बरसे इनपर
लुटाई है खुशियाँ इन्होने दुनियाँ पर,
छुपाये है आँसू दुनियाँ को हँसाकर
रहमत करे खुदा इनपर।

खुशियाँ

तुम्हारी चाह अब हमे नही रही
खुशियो तुम आई हो बड़े देरसे,
अब तो दिल बहलता है
सिर्फ मुश्किलो और परेशानीसे।

खुशियो तुम सुबह के
ओस की तरह हो,
घंटे दो घंटे का सुहाना साथ
फिर जमी पे छलक जाती हो।

खुशियो तुम छलती हो मुझे बहुत
थोड़ेसे वक्त को आती हो
फिर छोड़ जाती हो तनहाई
थोडेसे जल के बूदोंने
बताओ कब धरती की प्यास बुझाई।

खुशियों की आस मुझे ऐसे लागी
दु:ख मे ना मै जी पाई,
जो दुख को मै जी पाती
खुशियाँ बन जाती परछाई।

खुशियो मै तुम्हे अपनी
प्रियतम नही दासी बनाना चाहूंगा,
तुम बिन रहना गवारा हमे
प्रियतम के बिना ना मै रह पाऊंगा।

खुशियो ना आओ ऐसे की
हम तुम्हारे बिना रह ना पाये,
भर दो शरीर मे प्राण इतना
के दु:ख भी हमे देख मुस्कुराये।

सुख की लालसा बुरी नही
बुरी है इसकी संगत,
छोड़ जाती है बुरी आदते
जीवन कर देती बेरंगत।

जो सिर्फ खुशियों के पीछे भागे
खुशियाँ भाग जाती दूर,
जिसने जीना सीख लिया
खुशियाँ मिले भरपूर।

खुशियो तुम्हारे कारण ही
आज दु:ख बदनाम है,
वरना इतने समय साथ रहने
ना कोई महेरबान है।

दुःख

मुसीबते दुःख लाती है
और दुख लाता है साहस,
आदमी को सक्षम बनाने वाला
दुःख तो है पारस।

दुःख पर रोने वालो
तुम सुख को दूर भगा रहे,
जिसने दुःख मे जीना सीख लिया
आज वो सुख मे नहा रहे।

सुख की आशा रखने वालो
पहले दुःख के साथ जीलो,
चलकर गिरनेसे ज्यादा
गिरकर चलना सीखलो।

इश्कीया शायरी

मोहब्बत में जानम,
इतना बेरहम ना बना देना ।
मदहोश तेरे हुस्नसे,
अपनोको ना भुला देना ।

इश्क में चाहत का
सैलाब उठेगा फिर गिरेगा,
कभी ताजमहल बनेगा
तो कभी हाथ कटेगा।

इशारो इशारो मे बात करती हो,
क्यो जमाने से ये ड़रती हो,
गर हमपे इतना मरती हो,
तो पास आनेसे क्यो शरमाती हो।

सिर्फ जुबान से शेर कहने वाले
हवा मे भाप बनकर उड़ जायेंगे,
हम दिलसे शेर कहते है
आपके दिल मे उतर जायेंगे।

कोई उनसे कहदे के
हम उनके तरफदार नही,
हम तो तरफदार है उनके
जिसने इन्हे बनाया।

गेसुओ में अपने उलझाकर
चाहती हो के हम भटके नही,
आँखोमें अपने बसा कर
चाहती हो के हम डूबे नही,
दिल मे अपने उतारकर
चाहती हो के हम कुछ कहे नही,
इतना गजब ढ़ाती हो
लगता है ये हम है या नही।

जो भी हवा का झोका
तुमसे होकर इधर आता है,
हर पल तुम्हारे लिये जीनेका
नया पैगाम लाता है।

यू तो गलतीसे भी बातोमें
प्यार का इजहार होता है,
आँखो ही आँखोमे इजहार हो
तो कोई बात होंगी,
तन से तन का मिलन
तो जानवर भी करते है,
मन से मन का मिलन
हो तो कोई बात होंगी।

दिल का इस्तेमाल नही किया तो
लीद बन जाओंगे,
खेतो में तो क्या
कूड़े कचरेमें डालनेके भी काम न आओगे।

फूलों की खुशबु की
चाहत तुझसे है,
दिल की धड़कन की
आहट तुझसे है,
प्यार का इजहार करना
भूल ना जाना,
क्योंकी जिंदगी की
चाहत तुझसे है।

उन्हे शर्मिंदा कर
रुला दिया हमने,
खुदा इनके दिल की दुनियाँ
रोशन हो अब हाथोसे अपने।

उनको रूलादू
येतो इरादा नही था,
हमसे दूर जाने का
यह अच्छा बहाना था।

यह कार्य नही क्रांति है।

चेहरेपर हँसी लाना तो दूर
तुम्हे मुस्कुराना भी मुश्किल होगा,
परदा गिरा लेना वरना
चेहरा दिल की बात बता देगा।

इशारोमें ना कहो
हमारी नजरे जरा कमजोर है,
ऐसा इठलाकर ना चलो
दिल पर ना हमारा कोई जोर है।

मोहब्बत में एक नजर में ही
मर जाया करते थे,
अब आलम यह है के
मौत को भी हम भाते नही।

हुस्न का जाम ये छलकाते
इनसे सुलगती कई राते
इठलाते कभी बलखाते
कई दिलो की दवा ये कहलाते।

भीगे भीगे इस मौसम मे
आज तुम जम के बरसो,
मुद्दत के बाद आई है रात
चलो भूले कल परसो।

ऐसे ही कोई बदनाम नही होते
अपने युही कभी बेईमान नही होते,
जब बेहरम, बेरुखी का इनाम पाते
तब हजारो इल्जाम अपने सर उठाते।

फूल कागज के
खुशबु कहासे लाओगे
किसी और का दिल लेकर
बोलो दिलबर कैसे कहलाओगे।

हमे भूला भी दोगे
तो कोई बात नही,
भूला सकोंगे
या भूल ही जाओंगे
तो कोई बात होगी।
हमे जलाओगे क्या जलानाही पड़ेगा
जला सको तो कोई बात होगी।

आओ करे हम मस्ती
खोंये चलो अपनी हस्ती,
नाचना, खेलना गाना झूमना
लाता मनमें बहुत चुस्ती।

यह कार्य नही क्रांति है।

यादो मे हमे ना बुलाना,
हा थोड़ा मुश्किल ही होगा
हमे भुलाना।

जलाओ, बुझाओ
जलाकर फिर राख कर दो,
तुम्हारे इसी अदाओंपर
तो हम मरते है।

उजालो के थे हम हकदार
अंधेरे हमे मिले
रोशनी फैलाकर हर जगह
बिन चिता हम जले।

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे हैं।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर हैं।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करता हैं।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते हैं।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते हैं।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते हैं।
धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

"हे रब ना निकले इस
दिवाली किसीका दिवाला
और रमजान में ना जाये
किसी की जान
है तू सबका रखवाला
बनी रहे तेरी, यही पहेचान।"

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

कीमत ₹ - १००/-

यह कार्य नही क्रांति है।